

## प्रारंभिक परीक्षा

### भारत ने दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के "सामान्य से कम" रहने का अनुमान जताया

#### संदर्भ

11 वर्षों में पहली बार, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने अप्रैल का पूर्वानुमान जारी किया है, जिसमें "सामान्य से कम" दक्षिण-पश्चिम मानसून की चेतावनी दी गई है।

#### पूर्वानुमान चेतावनी के मुख्य बिंदु

- जून और सितंबर 2026 के बीच, भारत में दीर्घकालिक औसत (LPA) का केवल 92% वर्षा होने का अनुमान है।
- इस सतर्क दृष्टिकोण का केंद्रीय कारण अल नीनो (El Niño) का संभावित विकास है—जो मध्य भूमध्यरेखीय प्रशांत जल के समय-समय पर गर्म होने की घटना है।
- वर्तमान में, प्रशांत क्षेत्र "कमजोर" ला नीना स्थितियों से एक तटस्थ चरण की ओर बढ़ रहा है।
- अल नीनो के नकारात्मक प्रभाव मानसून सीजन के उत्तरार्ध (अगस्त-सितंबर) के दौरान तीव्र होने की उम्मीद है।
- **प्रतिस्ंतुलनकारी कारक (Countervailing Factors)**
  - सकारात्मक हिंद महासागर द्विश्रुव (Positive IOD): एक "सकारात्मक" IOD (इंडोनेशिया के पास पूर्वी हिस्से की तुलना में अफ्रीका के पास पश्चिमी हिंद महासागर का अधिक गर्म होना) सीजन के अंत में विकसित होने की संभावना है।
  - बर्फ के आवरण में कमी: सर्दियों के दौरान उत्तरी गोलार्ध में सामान्य से कम बर्फ का आवरण आमतौर पर 'भूमि-समुद्र तापीय प्रवणता' (land-sea thermal gradient) को मजबूत करता है, जिससे मानसून की हवाएं अधिक सशक्त होती हैं और पूरे भारत में वर्षा में वृद्धि होती है।

**दीर्घकालिक औसत (LPA):** 50 साल की अवधि (वर्तमान में 1971-2020 के आंकड़ों पर आधारित) में दर्ज की गई औसत वर्षा। IMD LPA (87 सेमी) के आधार पर मानसून को वर्गीकृत करने के लिए विशिष्ट शब्दावली का उपयोग करता है:

- **न्यून (Deficient):** LPA के 90% से कम वर्षा।
- **सामान्य से कम (Below Normal):** LPA का 90% से 94% (वर्तमान पूर्वानुमान: 92%)।
- **सामान्य के करीब (Near Normal):** LPA का 96% से 104%।

### सुभाष चंद्र बोस की बौद्धिक विरासत

#### संदर्भ

सुभाष चंद्र बोस केवल एक सैन्य कमांडर नहीं थे; वे एक परिष्कृत राजनीतिक दार्शनिक थे जिन्होंने पूर्वी आध्यात्मिकता और पश्चिमी भौतिक गतिशीलता के बीच एक "उच्च संश्लेषण" (higher synthesis) की खोज की थी।

#### दार्शनिक आधार

- **माया का खंडन:** अपने जीवन के आरंभ में, बोस शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत से प्रभावित थे। हालाँकि, अंततः उन्होंने माया के सिद्धांत (संसार को भ्रम मानना) को त्याग दिया, यह तर्क देते हुए कि एक क्रांतिकारी उस संसार के लिए नहीं लड़ सकता जो वास्तविक नहीं है।
- **वास्तविकता को आत्मा के रूप में देखना:** अपनी आत्मकथा, 'एन इंडियन पिलग्रिम' (1937) में, उन्होंने संसार को आत्मा की अभिव्यक्ति के रूप में पुनर्परिभाषित किया, एक विकसित होती हुई, वास्तविक सत्ता जो एक नैतिक मूल से संचालित होती है, जिसे उन्होंने सरल शब्दों में प्रेम के रूप में परिभाषित किया।
- **हेगेल का द्वंद्ववाद:** बोस ने हिंदू विचार को पश्चिमी तर्क के साथ संश्लेषित किया। उन्होंने हेगेल के द्वंद्ववाद को अपनाया, यह मानते हुए कि प्रगति एक थीसिस और एक एंटीथीसिस के संघर्ष के माध्यम से होती है, जिसके परिणामस्वरूप एक सिंथेसिस होता है।

### साम्यवाद (Samyavada): सामंजस्यपूर्ण समानता का सिद्धांत

- बोस का अद्वितीय राजनीतिक योगदान **साम्यवाद (Samyavada)** था, जो संस्कृत शब्द 'साम्य' (समानता/सामंजस्य) और 'वाद' (सिद्धांत) से उत्पन्न हुआ है।
- **विचारधाराओं का संश्लेषण:** द इंडियन स्ट्रगल (1934) में, उन्होंने प्रस्ताव दिया कि भारत को एक ऐसा संश्लेषण तैयार करना चाहिए जो दोनों के गुणों को समाहित करे: पूर्ववर्ती से दक्षता और राष्ट्रीय एकता, तथा उत्तरवर्ती से सामाजिक न्याय और अंतर्राष्ट्रीयता।
- **गैर-नकल दृष्टिकोण:** उनका मानना था कि ब्रिटिश संवैधानिकता, फ्रांसीसी स्वतंत्रता और रूसी मार्क्सवाद की विरासतों के बाद साम्यवाद विश्व सभ्यता के लिए भारत का विशिष्ट योगदान था।
- **समाजवादी राज्य:** व्यवहार में, साम्यवाद का लक्ष्य था:
  - पूर्ण राष्ट्रीय स्वतंत्रता।
  - उत्पादन के साधनों पर सामाजिक स्वामित्व।
  - वैज्ञानिक बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण।
  - सामाजिक न्याय और जाति एवं सांप्रदायिक बाधाओं को दूर करने पर आधारित एक "नई व्यवस्था" (New Order)।

### वैज्ञानिक पुनर्निर्माण और अधिनायकवाद

- **औद्योगीकरण:** ग्रामीण आत्मनिर्भरता पर गांधीवादी जोर के विपरीत, बोस वैज्ञानिक औद्योगीकरण के प्रबल समर्थक थे।
  - हरिपुरा (1938) में कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने तर्क दिया कि गरीबी उन्मूलन के लिए उत्पादन और वितरण दोनों पर सामाजिक नियंत्रण आवश्यक है।
- **आदर्श संघ:** बोस का मानना था कि एक नए स्वतंत्र, निर्धन भारत को पुनर्निर्माण की अवधि के दौरान एक मजबूत केंद्र सरकार की आवश्यकता होगी।
  - उन्होंने एक खंडित समाज में विकेंद्रीकृत लोकतंत्र की धीमी गति को दरकिनार करने के लिए कुछ हद तक अधिनायकवाद के साथ एक "मजबूत आदर्श संघ" (Model Organization) की वकालत की।

### कण भौतिकी में फ्लेवर पहेली (FLAVOUR PUZZLE)

#### संदर्भ

- कण भौतिकी में, वैज्ञानिकों ने पाया है कि मौलिक कण तीन दोहराए जाने वाले परिवारों में होते हैं जिन्हें **पीढ़ियाँ (generations)** कहा जाता है, लेकिन वर्तमान सिद्धांत के भीतर इस प्रतिरूप (pattern) का कारण अभी भी अस्पष्ट है, जो "फ्लेवर पहेली" (flavour puzzle) उत्पन्न करता है।

#### फ्लेवर और पीढ़ियों के बारे में

- **अर्थ:** कण भौतिकी में, "फ्लेवर" उन विभिन्न प्रकार के मौलिक कणों को संदर्भित करता है जो समान गुण साझा करते हैं लेकिन मुख्य रूप से द्रव्यमान और अंतःक्रिया शक्ति में भिन्न होते हैं (जैसे, इलेक्ट्रॉन, म्यूऑन, ताऊ)।
- **फ्लेवर कहाँ दिखाई देता है:** फ्लेवर मुख्य रूप से क्वार्क और लेप्टॉन पर लागू होता है, जो पदार्थ के बुनियादी निर्माण खंड हैं।
- **फ्लेवर के उदाहरण:**
  - कुल क्वार्क फ्लेवर: 6 (अप, डाउन, चार्म, स्ट्रेंज, टॉप, बॉटम)।
  - कुल लेप्टॉन फ्लेवर: 6 (इलेक्ट्रॉन, म्यूऑन, ताऊ और उनके न्यूट्रिनो)।
- **मुख्य विशेषता:** विभिन्न फ्लेवर वाले कण 'दुर्बल नाभिकीय अंतःक्रियाओं' (जिसे फ्लेवर मिश्रण कहा जाता है) के माध्यम से एक-दूसरे में परिवर्तित हो सकते हैं।
  - **फ्लेवर मिश्रण** एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कण दुर्बल अंतःक्रियाओं के माध्यम से एक फ्लेवर से दूसरे में बदलते हैं।
- **पीढ़ी (Generation):** कणों को तीन पीढ़ियों में व्यवस्थित किया जाता है, जिनमें से प्रत्येक में समान कण होते हैं लेकिन

बढ़ते द्रव्यमान के साथ।

पीढ़ी	लेप्टॉन (Leptons)	क्वार्क (Quarks)
प्रथम पीढ़ी	इलेक्ट्रॉन, इलेक्ट्रॉन न्यूट्रिनो	अप क्वार्क, डाउन क्वार्क
द्वितीय पीढ़ी	म्यूऑन, म्यूऑन न्यूट्रिनो	चार्म क्वार्क, स्ट्रेंज क्वार्क
तृतीय पीढ़ी	ताऊ, ताऊ न्यूट्रिनो	टॉप क्वार्क, बॉटम क्वार्क

- **द्रव्यमान पदानुक्रम:** प्रत्येक पीढ़ी पिछली पीढ़ी की तुलना में भारी होती है (म्यूऑन  $\approx$  इलेक्ट्रॉन से 200 गुना भारी; ताऊ  $\approx$  म्यूऑन से 17 गुना भारी)।
- **पदार्थ में भूमिका:** केवल प्रथम पीढ़ी के कण ही सामान्य पदार्थ (इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन से बने परमाणु) बनाते हैं।
- कण भौतिकी में, "फ्लेवर" विभिन्न प्रकार के मूलभूत कणों को संदर्भित करता है, जबकि "पीढ़ियाँ" उन समूहों को संदर्भित करती हैं जो इन फ्लेवरो को समान गुणों वाले दोहराए जाने वाले परिवारों में व्यवस्थित करती हैं।

### फ्लेवर पहेली के बारे में

अपनी सफलता के बावजूद, मानक मॉडल (Standard Model) कई फ्लेवर-संबंधित प्रश्नों को अनुत्तरित छोड़ देता है। इसे 'फ्लेवर पहेली' कहा जाता है:

- **पीढ़ी प्रतिकृति समस्या:** मॉडल यह स्पष्ट नहीं करता है कि कण ठीक तीन पीढ़ियों में ही क्यों मौजूद हैं।
- **द्रव्यमान पदानुक्रम समस्या:** बिना किसी स्पष्ट व्याख्या के कणों के द्रव्यमान में अत्यधिक भिन्नता होती है। उदाहरण के लिए:
  - इलेक्ट्रॉन अत्यंत हल्का है।
  - टॉप क्वार्क इलेक्ट्रॉन की तुलना में लगभग 3,50,000 गुना भारी है।
- **मिश्रण कोण रहस्य (Mixing Angles Mystery):** कण फ्लेवर के बीच रूपांतरित हो सकते हैं (जैसे, क्वार्क मिश्रण), लेकिन सिद्धांत इन मिश्रण मापदंडों के मानों की भविष्यवाणी नहीं कर सकता है।
- **मुक्त पैरामीटर (Free Parameters):** कणों के कई गुण जैसे द्रव्यमान और मिश्रण कोण, प्रयोगों के माध्यम से सिद्धांत में शामिल किए जाने चाहिए, न कि मौलिक सिद्धांतों से व्युत्पन्ना।
- **न्यूट्रिनो द्रव्यमान समस्या:** मानक मॉडल ने मूल रूप से द्रव्यमान रहित न्यूट्रिनो की भविष्यवाणी की थी, लेकिन प्रयोग दिखाते हैं कि उनके पास कम लेकिन गैर-शून्य द्रव्यमान होता है।
- **CP उल्लंघन (CP Violation):** मानक मॉडल में देखा गया CP उल्लंघन पूरी तरह से यह स्पष्ट नहीं कर सकता कि ब्रह्मांड में प्रतिद्रव्य (antimatter) की तुलना में द्रव्य (matter) कहीं अधिक क्यों है।

**CP उल्लंघन** कण भौतिकी की एक घटना है जहाँ आवेश संयुग्मन (C) और पैरिटी (P) की संयुक्त समरूपता टूट जाती है, जिसका अर्थ है कि भौतिकी के नियम कणों और उनके प्रतिकणों के लिए भिन्न होते हैं।

### मानक मॉडल (Standard Model) क्या है?

- कण भौतिकी का मानक मॉडल वर्तमान सैद्धांतिक ढांचा है जो मौलिक कणों और तीन मौलिक बलों का वर्णन करता है।
- यह तीन मौलिक बलों की व्याख्या करता है:
  - विद्युत चुंबकीय बल
  - दुर्बल नाभिकीय बल
  - प्रबल नाभिकीय बल
- **मॉडल में कण:**

श्रेणी	उदाहरण
क्वार्क	अप, डाउन, चार्म, स्ट्रेंज, टॉप, बॉटम
लेप्टान	इलेक्ट्रॉन, म्यूऑन, ताऊ, न्यूट्रिनो
बल वाहक (बोसॉन)	फोटॉन, ग्लुऑन, W, Z
अदिश कण	हिग्स बोसॉन

- शामिल नहीं है: गुरुत्वाकर्षण की व्याख्या मानक मॉडल द्वारा नहीं की गई है।

### फ्लेवर पहली को सुलझाने का महत्व

- नई भौतिकी की खोज: फ्लेवर को समझना मानक मॉडल से परे भौतिकी (नए कण, बल या समरूपता) को प्रकट कर सकता है।
- भव्य एकीकृत सिद्धांत (Grand Unified Theories): समाधान विद्युत चुंबकीय, दुर्बल और प्रबल बलों को एक एकल ढांचे के तहत जोड़ सकते हैं।
- द्रव्य-प्रतिद्रव्य विषमता को समझना: फ्लेवर मिश्रण और CP उल्लंघन की व्याख्या करने से यह स्पष्ट हो सकता है कि ब्रह्मांड में प्रतिद्रव्य की तुलना में द्रव्य अधिक क्यों है।
- प्रकृति की मौलिक संरचना में अंतर्दृष्टि: पहली को सुलझाने से प्रारंभिक कणों के गहरे संगठनात्मक सिद्धांतों का पता चल सकता है।
- कण भौतिकी प्रयोगों की उन्नति: भविष्य की खोजों के लिए अगली पीढ़ी के कण त्वरकों की आवश्यकता हो सकती है जो  $10^{-21}$  मीटर से छोटे पैमाने की जांच कर सकें।

### ईरान की अमेरिका द्वारा नौसैनिक नाकाबंदी और इसके निहितार्थ

#### संदर्भ

- अमेरिका-ईरान वार्ताओं के विफल होने के बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका ने चल रहे पश्चिम एशियाई संघर्ष में दबाव बढ़ाने के लिए ईरानी बंदरगाहों और शिपिंग को लक्षित करते हुए एक नौसैनिक नाकेबंदी की घोषणा की।

#### नाकाबंदी के बारे में

- परिभाषा: नौसैनिक नाकेबंदी एक युद्धकालीन समुद्री अभियान है जो जहाजों या विमानों को किसी युद्धरत राज्य के बंदरगाहों में प्रवेश करने या वहां से बाहर निकलने से रोकता है; अंतर्राष्ट्रीय कानून के तहत इसे आम तौर पर युद्ध की कार्रवाई के रूप में माना जाता है।
- परिचालन तंत्र: नौसैनिक बल नाकेबंदी वाले राज्य के साथ व्यापार करने के संदिग्ध जहाजों को रोकने या उनका निरीक्षण करने के लिए सतही युद्धपोतों, समुद्री गश्ती विमानों और निगरानी प्रणालियों को तैनात करते हैं।
- नाकेबंदी के प्रकार
  - नजदीकी नाकेबंदी (Close blockade): लक्षित राज्य की तटरेखा के पास तैनात नौसैनिक बल।
  - दूरस्थ नाकेबंदी (Distant blockade): दुश्मन की मिसाइलों और तटीय रक्षा प्रणालियों से बचने के लिए दूर तैनात बल।
- सामरिक समुद्री संदर्भ:
  - होर्मुज जलडमरूमध्य: वैश्विक तेल व्यापार का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा यहीं से गुजरता है।
  - सामान्य परिस्थितियों में प्रतिदिन लगभग 150 जहाज इस जलडमरूमध्य से गुजरते हैं।

#### नाकेबंदी पर अंतर्राष्ट्रीय कानून संबंधी बहस

कानूनी सिद्धांत / संधि	नाकेबंदी का समर्थन	नाकेबंदी को चुनौती
नौसैनिक युद्ध का कानून (सैन)	यदि उचित रूप से घोषित और प्रभावी ढंग से	नाकेबंदी को नागरिकों की भुखमरी से बचना चाहिए

रेमो मैनुअल 1994)	लागू की गई हो, तो सशस्त्र संघर्ष के दौरान नौसैनिक नाकेबंदी की अनुमति देता है।	और मानवीय आपूर्ति की अनुमति देनी चाहिए।
संयुक्त राष्ट्र चार्टर अनुच्छेद 51 (आत्मरक्षा)	यदि कोई राज्य सशस्त्र हमले का जवाब दे रहा है, तो वह सैन्य उपाय कर सकता है।	यदि किसी प्रत्यक्ष ईरानी हमले ने आत्मरक्षा को प्रेरित नहीं किया है, तो नाकेबंदी की वैधता संदिग्ध है।
संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का अधिकार (अध्याय VII)	UNSC अंतर्राष्ट्रीय शांति बनाए रखने के लिए नाकेबंदी को अधिकृत कर सकती है।	वर्तमान में नाकेबंदी को अधिकृत करने वाला कोई स्पष्ट UNSC अधिदेश नहीं है।
नौवहन की स्वतंत्रता (UNCLOS)	नाकेबंदी अभी भी होर्मुज जैसे अंतर्राष्ट्रीय जलडमरूमध्य के माध्यम से पारगमन (transit) की अनुमति दे सकती है।	तटस्थ जहाजों को प्रतिबंधित करना नौवहन की स्वतंत्रता के सिद्धांतों का उल्लंघन कर सकता है।
मानवीय कानून (जेनेवा कन्वेंशन)	सैन्य उपायों की अनुमति है यदि वे वैध सैन्य उद्देश्यों को लक्षित करते हैं।	मानवीय कष्ट या आर्थिक भुखमरी पैदा करने वाली नाकेबंदी अवैध हो सकती है।
तटस्थता कानून	नाकेबंदी लागू करने के लिए तटस्थ जहाजों का निरीक्षण किया जा सकता है।	शांतिपूर्वक व्यापार करने वाले तटस्थ जहाजों को जब्त करना तटस्थता अधिकारों का उल्लंघन कर सकता है।

#### ईरान पर अमेरिकी नाकाबंदी के कारण

- **आर्थिक दबाव:** तेहरान के युद्ध वित्तपोषण को कमजोर करने के लिए ईरानी तेल निर्यात को रोकना।
- **वार्ता में प्रभाव(Leverage):** राजनयिक वार्ता विफल होने के बाद ईरान को बातचीत की मेज पर लौटने के लिए मजबूर करना।
- **परमाणु रोकथाम:** परमाणु संवर्धन गतिविधियों का समर्थन करने की ईरान की वित्तीय क्षमता को सीमित करना।
- **समुद्री मार्गों का नियंत्रण:** ईरान को होर्मुज जलडमरूमध्य में शिपिंग को नियंत्रित करने या पारगमन शुल्क (transit tolls) वसूलने से रोकना।
- **गठबंधन का आश्वासन:** ईरानी क्षेत्रीय प्रभाव से चिंतित खाड़ी सहयोगियों के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करना।

#### नीतिगत बदलाव और अस्पष्टता

- **प्रारंभिक कठोर घोषणा:** अमेरिका ने शुरू में होर्मुज जलडमरूमध्य में प्रवेश करने या बाहर निकलने वाले सभी जहाजों की नाकेबंदी करने की धमकी दी थी, जिससे वैश्विक ऊर्जा संकट की आशंका पैदा हो गई थी।
- **बाद का स्पष्टीकरण:** अमेरिकी सेना ने बाद में स्पष्ट किया कि नाकेबंदी ईरानी बंदरगाहों में प्रवेश करने या बाहर निकलने वाले जहाजों को लक्षित करेगी, जबकि होर्मुज जलडमरूमध्य के माध्यम से पारगमन की अनुमति दी जाएगी।
- यह बदलाव खाड़ी सहयोगियों को डराने से बचने और तेल की कीमतों में अचानक वृद्धि को रोकने के लिए किया गया था।

#### नाकाबंदी में चुनौतियां

- **प्रवर्तन संबंधी चुनौतियां:** जीपीएस स्पूफिंग, गलत पोर्ट रिकॉर्ड और जटिल शिपिंग मार्गों के कारण ईरान के साथ व्यापार करने वाले जहाजों की पहचान करना कठिन है।
- **शिपिंग और बीमा जोखिम:** युद्ध-जोखिम बीमा लागत में तेजी से वृद्धि हो सकती है, जिससे शिपिंग कंपनियां खाड़ी मार्गों का उपयोग करने के लिए हतोत्साहित हो सकती हैं।
- **तनाव बढ़ने का खतरा:** ईरान व्यापारिक जहाजों को निशाना बनाकर या फारस की खाड़ी में समुद्री यातायात को बाधित करके जवाबी कार्रवाई कर सकता है।
- **परिचालन जटिलता:** विशाल समुद्री क्षेत्र और भारी शिपिंग यातायात पूर्ण प्रवर्तन को कठिन बनाते हैं।
- **प्रोक्सि संघर्ष जोखिम:** यमन में हूतियों जैसे ईरान-संबद्ध समूह लाल सागर शिपिंग मार्गों को लक्षित कर सकते हैं, जिससे संघर्ष व्यापक हो सकता है।

- **नीतिगत विरोधाभास:** यह दृष्टिकोण वैश्विक समुद्री मार्गों में नौवहन की स्वतंत्रता की रक्षा करने में संयुक्त राज्य अमेरिका की ऐतिहासिक भूमिका के साथ असंगत प्रतीत होता है।

#### भारत पर नाकाबंदी का प्रभाव

- **ऊर्जा सुरक्षा जोखिम:** भारत अपने कच्चे तेल का लगभग 85 प्रतिशत आयात करता है, जिसमें से अधिकांश पश्चिम एशिया से आता है; व्यवधान तेल की कीमतों में काफी वृद्धि कर सकता है।
- **समुद्री व्यापार भेद्यता:** भारत के तेल आयात का लगभग 60 प्रतिशत होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरता है, जिससे यह क्षेत्र रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हो जाता।
- **ईरान के साथ व्यापार:** भारत ईरान को चावल, फार्मास्यूटिकल्स, मशीनरी और रसायनों का निर्यात करता है और बिटुमेन एवं पेट्रोकेमिकल उत्पादों का आयात करता है, जिसमें द्विपक्षीय व्यापार प्रति वर्ष लगभग \$1-1.2 बिलियन है।
- **मुद्रास्फीति का दबाव:** कच्चे तेल की ऊंची कीमतें ईंधन, परिवहन और विनिर्माण लागत को बढ़ा सकती हैं, जिससे मुद्रास्फीति में योगदान मिलता है।
- **संपर्क परियोजनाएं:** क्षेत्रीय अस्थिरता भारत के चाबहार बंदरगाह और अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) पहल को प्रभावित कर सकती।
- **प्रवासी प्रभाव:** खाड़ी देशों में आर्थिक अस्थिरता अप्रत्यक्ष रूप से इस क्षेत्र में रहने वाले लाखों भारतीय श्रमिकों को प्रभावित कर सकती है।

### अप्रत्याशित लाभ कर(WINDFALL TAX)

#### संदर्भ

पश्चिम एशिया में तनाव के कारण कच्चे तेल की कीमतें 100 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर पहुँचने के बाद केंद्र सरकार द्वारा डीजल और एटीएफ निर्यात पर **अप्रत्याशित लाभ कर(windfall tax)** में भारी वृद्धि करने के बाद आईओसी, बीपीसीएल, एचपीसीएल और रिलायंस जैसी तेल विपणन कंपनियों के शेयरों पर दबाव आ गया।

#### परिभाषा

- अप्रत्याशित लाभ कर(windfall tax) सरकार द्वारा विशिष्ट उद्योगों या कंपनियों पर लगाया गया एक उच्च कर दर है, जब वे अपनी स्वयं की व्यावसायिक पैतरेबाजी या निवेश के बजाय अनुकूल बाहरी परिस्थितियों के कारण असाधारण, विशाल लाभ का अनुभव करते हैं, जिसे 'विंडफाल गेन' कहा जाता है। ऊर्जा क्षेत्र में, ये लाभ आमतौर पर तब होते हैं जब वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव कच्चे तेल और ईंधन की कीमतों को बढ़ाते हैं।

#### उद्देश्य

- यह सुनिश्चित करना कि वैश्विक संकटों के परिणामस्वरूप होने वाले असाधारण लाभ को सार्वजनिक राजकोष के साथ साझा किया जाए।
- उपभोक्ताओं पर उच्च ईंधन कीमतों के प्रभाव को कम करने वाले सब्सिडी या सामाजिक कार्यक्रमों को वित्तपोषित करने में सरकार की मदद करना।
- आर्थिक या भू-राजनीतिक अस्थिरता की अवधि के दौरान सरकार के लिए अतिरिक्त राजस्व उत्पन्न करना।

#### यह कैसे काम करता है?

- यह कर आम तौर पर ईंधन के निर्यात या घरेलू कच्चे तेल के उत्पादन पर लेवी के रूप में लागू किया जाता है।
- **बेंचमार्क ट्रेडिंग:** सरकार वैश्विक कीमतों (जैसे ब्रेंट क्रूड) की निगरानी करती है। जब कीमतें एक निश्चित सीमा से अधिक हो जाती हैं, तो प्रति इकाई अतिरिक्त लाभ पर कर लगाया जाता है।
- **पाक्षिक संशोधन:** भारत में, सरकार आमतौर पर पिछली पखवाड़े की औसत अंतर्राष्ट्रीय कीमत और रिफाइनरी मार्जिन के आधार पर हर दो सप्ताह में इन कर दरों की समीक्षा और समायोजन करती है।
- **विशिष्ट शुल्क:** जैसा कि हालिया अपडेट में देखा गया है, विभिन्न उत्पादों पर अलग-अलग दरें लागू होती हैं।

### मुख्य विशेषताएं

- **गतिशील प्रकृति:** मानक कॉर्पोरेट टैक्स के विपरीत, विंडफाल टैक्स अस्थायी होता है और इसमें उतार-चढ़ाव होता रहता है। वैश्विक कीमतों में गिरावट आने पर इसे शून्य तक कम किया जा सकता है।
- **लक्षित कार्यान्वयन:** यह विशेष रूप से निर्यात पर विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क (SAED) को लक्षित करता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कंपनियां विदेशों में उच्च लाभ तलाशने से पहले घरेलू ईंधन उपलब्धता सुनिश्चित करें।
- **छूट:** अक्सर, छोटे पैमाने के उत्पादकों या उन लोगों को जो विशिष्ट घरेलू आपूर्ति अधिदेशों को पूरा करते हैं, छूट या कम दरें मिल सकती हैं।
- **तत्काल प्रभाव:** परिवर्तनों को आमतौर पर राजपत्र (Gazette) के माध्यम से अधिसूचित किया जाता है और कंपनियों को टैक्स लागू होने से पहले स्टॉक की जमाखोरी या समय-पूर्व निर्यात करने से रोकने के लिए ये तत्काल प्रभावी होते हैं।

### सचेतक(WHIP)

#### संदर्भ

कांग्रेस ने एक विशेष तीन दिवसीय संसदीय सत्र के दौरान महिला आरक्षण कानून में संशोधन और 2011 की जनगणना के आधार पर परिसीमन करने पर पार्टी के रुख का समर्थन करने और पूर्ण उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए अपने सभी लोकसभा सांसदों को एक सख्त 'श्री-लाइन व्हिप' (तीन-पक्तियों वाला सचेतक) जारी किया।

#### सचेतक (Whip) के बारे में

सचेतक एक राजनीतिक दल द्वारा जारी किया गया एक औपचारिक निर्देश है जिसमें उसके सदस्यों को मतदान के लिए उपस्थित रहने या निर्दिष्ट तरीके से मतदान करने का निर्देश दिया जाता है। भारत में, सभी राजनीतिक दल अपने विधायकों/सांसदों को ऐसे निर्देश जारी कर सकते हैं। प्रत्येक दल अपने संसदीय समूह के एक वरिष्ठ सदस्य को मुख्य सचेतक (Chief Whip) के रूप में नामित करता है, जो इन निर्देशों को जारी करने के लिए जिम्मेदार होता है। मुख्य सचेतक की सहायता अन्य सचेतकों द्वारा की जाती है।

#### सचेतक के प्रकार

- **वन-लाइन व्हिप (One-line whip):** एक हल्का निर्देश, जो मुख्यतः सदस्यों को मतदान के बारे में सूचित करता है; यदि सदस्य पार्टी के रुख का पालन नहीं करना चाहते, तो वे अनुपस्थित रहने या मतदान से विरत रहने का विकल्प चुन सकते हैं।
- **टू-लाइन व्हिप (Two-line whip):** यह सदस्यों के लिए मतदान के समय सदन में उपस्थित रहना आवश्यक करता है।
- **श्री-लाइन व्हिप (Three-line whip):** महत्वपूर्ण विषयों (जैसे प्रमुख विधेयक या अविश्वास प्रस्ताव) पर जारी किया जाने वाला कड़ा निर्देश, जिसमें सदस्यों के लिए पार्टी लाइन के अनुसार मतदान करना अनिवार्य होता है।

#### संवैधानिक स्थिति

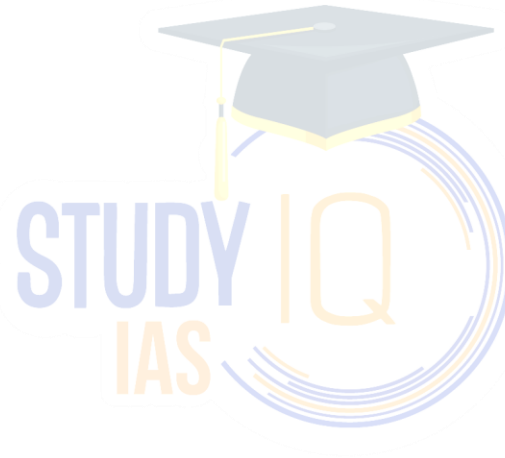
सचेतक के पद का स्पष्ट प्रावधान भारत के संविधान, संसदीय नियमों या किसी कानून में नहीं किया गया है। यह स्थापित संसदीय परंपराओं (parliamentary conventions) पर संचालित होता है।

#### एक सचेतक के कार्य

- यह सुनिश्चित करना कि सदस्य पार्टी के निर्णयों के अनुरूप मतदान करें।
- पार्टी के रुख को संप्रेषित करना और सदस्यों की राय जानना।
- विधायिका में पार्टी के भीतर अनुशासन बनाए रखना।
- कार्यवाही के दौरान सदस्यों की उपस्थिति सुरक्षित करना।
- विधायकों के बीच असंतोष का पता लगाना और पार्टी नेतृत्व को उसकी रिपोर्ट करना।
- वाद-विवाद और विधायी कार्यों के लिए वक्ताओं की सूची तैयार करना और प्रसारित करना।
- संसद के भीतर पार्टी की एकजुटता बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करना।

### सर्वोच्च न्यायालय के प्रमुख निर्णय

- **किहोतो होलोहन बनाम जाचिल्लू (1992):** उच्चतम न्यायालय ने दसवीं अनुसूची (दल-बदल विरोधी कानून) की वैधता को बरकरार रखा और पुष्टि की कि दल सचेतकों के माध्यम से सदस्यों को निर्देशित कर सकते हैं, हालांकि ऐसी शक्ति असीमित नहीं है और इसे संवैधानिक सिद्धांतों के अनुरूप होना चाहिए।
- **राजेंद्र सिंह राणा बनाम स्वामी प्रसाद मौर्य (2007):** न्यायालय ने फैसला सुनाया कि एक निजी सदस्य विधेयक (private member's bill) के लिए सचेतक जारी नहीं किया जा सकता है, क्योंकि ऐसे प्रस्ताव व्यक्तिगत विधायकों द्वारा पेश किए जाते हैं, न कि पार्टियों द्वारा।
- **जगजीत सिंह बनाम हरियाणा राज्य (2006):** न्यायालय ने स्पष्ट किया कि सचेतक जारी करना और उसके उल्लंघन के लिए की गई कार्रवाई न्यायिक समीक्षा के अधीन है, और इसे निष्पक्षता एवं प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का पालन करना चाहिए।



## मुख्य परीक्षा

### भारतीय मध्यम वर्ग आर्थिक रूप से असुरक्षित बना हुआ है

#### संदर्भ

हालिया आर्थिक बहसों और नीतिगत चर्चाओं से पता चलता है कि यद्यपि भारत के आर्थिक विस्तार ने अत्यधिक गरीबी को काफी हद तक कम किया है, लेकिन इसने परिवारों का एक बड़ा वर्ग भी पैदा किया है जिसे "असुरक्षित मध्यम वर्ग" के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

#### परिचय

- भारत ने गरीबी कम करने में उल्लेखनीय प्रगति की है, विश्व बैंक द्वारा निर्धारित निम्न-मध्यम आय गरीबी सीमा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों का अनुपात एक दशक पहले लगभग 50% से घटकर हाल के वर्षों में लगभग 30% हो गया है। आर्थिक विकास ने भले ही अत्यधिक अभाव को कम करने में मदद की हो, लेकिन इससे व्यापक और निरंतर सामाजिक उत्थान नहीं हो पाया है।
- इसके परिणामस्वरूप एक "कमजोर मध्यम वर्ग" का उदय हुआ है, जो गरीबी और समृद्धि के बीच स्थित है, जिसकी विशेषता अस्थिर आय, सीमित सामाजिक सुरक्षा और अवसरों तक सीमित पहुंच है।
- इसके जवाब में, नीतिगत सोच में एक महत्वपूर्ण बदलाव उभर रहा है: पारंपरिक गरीब बनाम गैर-गरीब वर्गीकरण से आगे बढ़कर कल्याण की अधिक सूक्ष्म, व्यापक समझ की ओर बढ़ना।
- यह दृष्टिकोण केवल यह निर्धारित करने के बजाय कि व्यक्ति एक निश्चित गरीबी रेखा से ऊपर या नीचे आते हैं, इस बात का आकलन करने का प्रयास करता है कि व्यक्ति गरिमापूर्ण जीवन स्तर प्राप्त करने के कितने करीब हैं।

#### पारंपरिक गरीबी रेखा अपर्याप्त क्यों है?

- **द्विआधारी वर्गीकरण की समस्या:** गरीबी रेखा जनसंख्या को गरीब और गैर-गरीब में विभाजित करती है, जो आर्थिक खुशहाली के विभिन्न स्तरों को प्रतिबिंबित करने में विफल रहती है।
- **आर्थिक गतिशीलता की उपेक्षा:** यह इंगित नहीं करती कि व्यक्ति समय के साथ अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर रहे हैं या स्थिर बने हुए हैं।
- **सीमा का अवरोध:** गरीबी रेखा को पार करने से वित्तीय स्थिरता या झटकों से उबरने की क्षमता की गारंटी नहीं मिलती।
- **अनुभवजन्य प्रमाण:** गरीबी लगभग 50% से घटकर लगभग 30% हो जाने के बावजूद, बड़ी संख्या में लोग अभी भी सीमा रेखा से ठीक ऊपर आर्थिक रूप से असुरक्षित बने हुए हैं।

#### कल्याण और विकास को मापने के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोण

- **निरंतर-आधारित मूल्यांकन:** आर्थिक कल्याण के श्रेणीबद्ध मूल्यांकन के साथ कठोर बाइनरी ढांचे को बदल देता है।
- **समृद्धि संकेतक से दूरी:** यह मापता है कि परिवार केवल जीवित रहने के बजाय उचित जीवन स्तर प्राप्त करने से कितनी दूर हैं।
- **सबसे वंचितों पर ध्यान देना:** लक्षित हस्तक्षेप सुनिश्चित करते हुए जो सबसे पीछे हैं उन्हें अधिक नीतिगत महत्व देता है।
- **ऊपर की ओर गतिशीलता पर नज़र रखना:** आय और जीवन स्तर में प्रगति का मूल्यांकन करता है, न कि केवल गरीबी से बाहर निकलना।
- **भेद्यता और जोखिम का आकलन:** झटकों या अस्थिरता के कारण गरीबी में वापस फिसलने के जोखिम वाले परिवारों की पहचान करता है।
- **नीतिगत प्रभावशीलता:** सरलीकृत गरीबी-रेखा वर्गीकरण से परे जाकर अधिक सटीक कल्याणकारी नीतियों को डिजाइन करने में मदद करता है।
- **सहायक साक्ष्य:** यहां तक कि गरीबी का स्तर लगभग 30% तक गिरने के बावजूद, आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा गरीबी रेखा से ठीक ऊपर क्लस्टर बना हुआ है, जो इस तरह के परिष्कृत ढांचे की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

### मध्यम वर्ग की आर्थिक भेद्यता के पीछे के कारण

- **गरीबी रेखा से ऊपर उठकर भी असुरक्षित:** गरीबी रेखा से थोड़ा ऊपर (जैसे शहरी क्षेत्रों में ₹15,000-₹20,000 प्रति माह) कमाने वाला परिवार बुनियादी जरूरतों को तो पूरा कर सकता है, लेकिन अस्पताल में भर्ती जैसे अप्रत्याशित खर्चों को वहन नहीं कर सकता।
  - **उदाहरण:** एक एकल चिकित्सा आपातकाल (जैसे ₹1-2 लाख सर्जरी) परिवारों को संपत्ति बेचने या उच्च ब्याज वाले ऋण लेने के लिए मजबूर कर सकती है।
- **आय अस्थिरता:** गिग श्रमिकों (डिलीवरी एजेंट, ड्राइवर) या दैनिक वेतन भोगियों को मांग, मौसम या प्लेटफॉर्म एल्गोरिदम के आधार पर आय में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ता है।
- **कमजोर वित्तीय कुशलता:** कई परिवारों में 2-3 महीने की बचत भी नहीं होती है; उदाहरण के लिए, COVID-19 लॉकडाउन के दौरान, कई परिवारों ने हफ्तों के भीतर अपनी बचत समाप्त कर दी।
- **अपर्याप्त सामाजिक सुरक्षा:** अनौपचारिक श्रमिकों के पास अक्सर स्वास्थ्य बीमा या पेंशन की कमी होती है; उदाहरण के लिए, एक निर्माण श्रमिक के पास दुर्घटनाओं या वृद्धावस्था सुरक्षा के लिए कोई कवरेज नहीं होता है।
- **रुकी हुई ऊपर की ओर गतिशीलता:** पहली पीढ़ी का स्नातक कम वेतन वाली नौकरी सुरक्षित कर सकता है लेकिन सीमित अवसरों के कारण उच्च आय वर्ग में जाने के लिए संघर्ष कर सकता है।
- **नाजुकता का चक्र:** एक परिवार जो एक स्थिर नौकरी के माध्यम से गरीबी से बचता है, वह नौकरी छूटने के कारण वापस आ सकता है, फिर भेद्यता का दोहराया चक्र बनाने के लिए फिर से ठीक हो सकता है।
- **आर्थिक चिंता:** आईटी या स्टार्टअप जैसे क्षेत्रों में नौकरी छूटने का डर, विशेष रूप से वैश्विक मंदी के दौरान, निरंतर वित्तीय अनिश्चितता पैदा करता है।

### मुद्दे का महत्व

- **समावेशी विकास के लिए निहितार्थ:** एक कमजोर मध्यम वर्ग की दृढ़ता एक विकास रणनीति की सीमाओं को उजागर करती है जो रोजगार सृजन और आय असमानता को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं करती है।
- **मध्यम आय के जाल का जोखिम:** यदि वेतन वृद्धि धीमी रहती है और संरचनात्मक बाधाएं बनी रहती हैं, तो भारत के लिए मध्यम आय से उच्च आय वाली अर्थव्यवस्था में आसानी से संक्रमण करना मुश्किल हो सकता है।
- **उपभोग पर प्रभाव:** मध्यम वर्ग घरेलू मांग और खपत को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
  - यदि परिवार आर्थिक रूप से असुरक्षित महसूस करते हैं, तो उनके खर्च में गिरावट आ सकती है, जिससे आर्थिक विकास धीमा हो सकता है।
- **सामाजिक और राजनीतिक परिणाम:** मध्यम वर्ग के बीच आर्थिक असुरक्षा कल्याणकारी कार्यक्रमों की मांग को बढ़ा सकती है, सामाजिक असंतोष उत्पन्न कर सकती है और राजनीतिक गतिशीलता को प्रभावित कर सकती है।

### आगे की राह

- **सार्वजनिक क्षेत्र की निर्भरता से निजी नेतृत्व वाले विकास की ओर बदलाव:** पर्याप्त नौकरी सुरक्षा और उचित मुआवजा सुनिश्चित करते हुए आईटी, वित्त और उभरते उद्योगों जैसे क्षेत्रों में उच्च-कुशल रोजगार के विस्तार को प्रोत्साहित करना।
- **रोजगार सृजन के लिए विनिर्माण को पुनर्जीवित करना:** उत्पादन-लिंकड प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाओं को बढ़ाकर, एमएसएमई का समर्थन करके और टिकाऊ रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए व्यापार करने में आसानी में सुधार करके औद्योगिक विकास को मजबूत करना।
- **कौशल और सुरक्षा के माध्यम से अनौपचारिकता चक्र को तोड़ना:** श्रमिकों को स्थिर और उत्पादक नौकरियों में बदलने के लिए बड़े पैमाने पर कौशल विकास पहल के साथ विस्तारित सामाजिक सुरक्षा कवरेज को जोड़ना।
- **श्रमिक सुरक्षा के साथ गिग अर्थव्यवस्था के विकास को संतुलित करना:** नियामक ढांचे को बढ़ाना, संविदात्मक सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करना और गिग और सेवा क्षेत्र के श्रमिकों के लिए आय स्थिरता में सुधार करना।
- **उद्यमिता और स्वरोजगार को प्रोत्साहित करना:** नौकरी चाहने वालों को नौकरी देने वालों में बदलने और समावेशी कार्यबल भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए नवाचार, स्टार्टअप और डिजिटल उद्यमों को बढ़ावा देना।

## वैश्विक एआई हथियारों की होड़

### संदर्भ

- सैन्य प्रणालियों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के तेजी से एकीकरण ने प्रमुख शक्तियों के बीच एक रणनीतिक प्रतिस्पर्धा शुरू कर दी है, जिसकी तुलना अक्सर शुरूआती परमाणु हथियारों की होड़ से की जाती है।

### देशों के बीच एआई हथियारों की होड़

- **संयुक्त राज्य अमेरिका:** रक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से एआई का तीव्र सैन्यीकरण।
  - सैन्य खुफिया विश्लेषण में एआई को लागू करने के लिए 'प्रोजेक्ट मेवेन' (Project Maven) शुरू किया गया।
  - स्वायत्त प्रणालियों (autonomous systems) के लिए पेंटागन के बजट में 13 बिलियन डॉलर से अधिक का आवंटन।
  - पलान्टिर (Palantir), एंडुरिल (Anduril) जैसी कंपनियाँ एआई ड्रोन विकसित कर रही हैं।
- **चीन:** राज्य-संचालित नागरिक-सैन्य संलयन (civil-military fusion) रणनीति, जो निजी तकनीकी फर्मों को रक्षा अनुसंधान के साथ एकीकृत करती है।
  - उदाहरण: चीन ने झुहाई एयरशो में एआई-नियंत्रित सैन्य प्रणाली और ड्रोन ब्रिगेड का प्रदर्शन किया।
- **रूस:** स्वायत्त लॉइटरिंग मूनशन (loitering munitions) और एआई-निर्देशित ड्रोनों का विकास, जिनका वास्तविक युद्ध (लैंसेट ड्रोन) में परीक्षण किया गया।
  - रूस-यूक्रेन युद्ध एआई-सक्षम ड्रोन और स्वायत्त हथियारों के लिए प्रमुख परीक्षण स्थल बन गया है।
- **यूरोप:** एआई-सक्षम हवाई रक्षा और एंटी-ड्रोन प्रणालियों के साथ पुनर्शास्त्रीकरण (जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन, पोलैंड की संयुक्त हवाई रक्षा पहल)।
- **अन्य उभरती शक्तियाँ:** भारत, इजराइल, ईरान, तुर्की, पाकिस्तान जैसे देश एआई-सक्षम सैन्य प्लेटफॉर्मों (स्वायत्त ड्रोन, निर्णय-सहायता लक्ष्यीकरण प्रणाली, साइबर-एआई युद्ध) में निवेश कर रहे हैं।
- **निजी क्षेत्र की भूमिका:** परमाणु हथियारों के विपरीत, एआई शस्त्रास्त्र स्पर्धा में निजी प्रौद्योगिकी फर्मों और स्टार्टअप (Palantir, Anthropic, Anduril, रक्षा तकनीक स्टार्टअप) भारी रूप से शामिल हैं।

### एआई हथियारों की होड़ में चुनौतियाँ

- **वैश्विक विनियमन का अभाव:** स्वायत्त हथियार प्रणालियों को नियंत्रित करने वाली कोई बाध्यकारी संधि नहीं है (परमाणु अप्रसार संधि या रासायनिक हथियार सम्मेलन के विपरीत)।
- **स्वायत्त वृद्धि (Escalation) के जोखिम:** एआई-चालित प्रणालियाँ मशीनी गति से संचालित होती हैं, जो संभावित रूप से अनपेक्षित सैन्य वृद्धि (एल्गोरिदम-प्रेरित प्रतिशोध परिदृश्य) को जन्म दे सकती हैं।
- **नैतिक चिंताएँ:** जीवन और मृत्यु के निर्णय मशीनों को सौंपना मानवीय और कानूनी प्रश्न खड़े करता है।
- **प्रसार जोखिम:** एआई तकनीक व्यापक रूप से उपलब्ध है, जिससे छोटे राज्यों और गैर-राज्य अभिकर्ताओं (non-state actors) को स्वायत्त हथियार विकसित करने में मदद मिलती है (यूक्रेन युद्ध में उपयोग किए गए सस्ते ड्रोन)।
- **दोहरे उपयोग वाली तकनीक (Dual-Use Technology):** एआई एक सामान्य-उद्देश्य वाली तकनीक है (बिजली या कंप्यूटिंग के समान), जिससे विनियमन कठिन हो जाता है क्योंकि नागरिक उपकरणों को सैन्य उपयोग के लिए अनुकूलित किया जा सकता है।
- **सुरक्षा दुविधा (Security Dilemma):** तकनीकी नुकसान के डर से देश विकास को गति देते हैं, जिससे एक स्वतः प्रबल होने वाली शस्त्रास्त्र स्पर्धा पैदा होती है।
- **निजी क्षेत्र पर निर्भरता:** निजी प्रौद्योगिकी कंपनियों पर सैन्य निर्भरता डेटा सुरक्षा, कॉर्पोरेट नैतिकता और रणनीतिक नियंत्रण के मुद्दे पैदा करती है।

### वैश्विक एआई हथियारों की होड़ के प्रबंधन के लिए आगे की राह

- **वैश्विक शासन ढांचा:** स्वायत्त हथियारों के लिए बाध्यकारी अंतर्राष्ट्रीय नियम विकसित करना (परमाणु अप्रसार संधि या रासायनिक हथियार सम्मेलन के समान)।

- **मानवीय नियंत्रण का सिद्धांत:** महत्वपूर्ण सैन्य निर्णयों पर सार्थक मानवीय नियंत्रण सुनिश्चित करना।
  - उदाहरण: परमाणु हथियार संबंधी निर्णयों पर मानवीय नियंत्रण बनाए रखने के लिए 2024 का अमेरिका-चीन समझौता।
- **पारदर्शिता और विश्वास-बहाली के उपाय:** सूचना साझाकरण, सैन्य एआई मानदंडों और सत्यापन तंत्र (शस्त्र नियंत्रण संवाद, एआई जोखिम-न्यूनकरण समझौते) को बढ़ावा देना।
- **नैतिक और कानूनी मानक:** एआई-सक्षम हथियार प्रणालियों में अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून के सिद्धांतों (भेदभाव, आनुपातिकता, जवाबदेही) को एकीकृत करना।
- **तकनीकी सुरक्षा उपाय:** अनपेक्षित वृद्धि या खराबी को रोकने के लिए 'फेल-सेफ' तंत्र और एल्गोरिदम निगरानी प्रणाली विकसित करना।
- **निजी क्षेत्र की भागीदारी का विनियमन:** रक्षा एजेंसियों और प्रौद्योगिकी कंपनियों के बीच सहयोग को नियंत्रित करने वाले स्पष्ट ढांचे (डेटा सुरक्षा, निर्यात नियंत्रण) स्थापित करना।
- **वैश्विक निर्यात नियंत्रण:** संवेदनशील एआई सैन्य प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण पर नियंत्रण मजबूत करना (दोहरे उपयोग वाली प्रौद्योगिकियों के लिए वासेनार व्यवस्था के समान)।
- **बहुपक्षीय सहयोग:** सैन्य एआई के मानदंड निर्धारित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र, जी20, ओईसीडी और अन्य अंतर्राष्ट्रीय मंचों के माध्यम से सहयोग को प्रोत्साहित करना।

### पश्चिम एशिया में संकट का भारत की अर्थव्यवस्था पर असर

#### संदर्भ

- चल रहे भू-राजनीतिक तनावों, विशेष रूप से रूस-यूक्रेन युद्ध और पश्चिम एशिया के संकट ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को अस्थिर कर दिया है।
- ऊर्जा बाजारों में व्यवधानों के कारण आपूर्ति श्रृंखला बाधित हुई है, कमोडिटी की कीमतें बढ़ी हैं और व्यापक आर्थिक अनिश्चितता पैदा हुई है।
- भारत के लिए, कच्चे तेल पर लगभग 90% आयात निर्भरता के कारण, इसके परिणाम महत्वपूर्ण हैं, जो विकास, मुद्रास्फीति और राजकोषीय स्थिरता को प्रभावित करते हैं।

#### वैश्विक ऊर्जा बाजारों में व्यवधान

- पश्चिम एशियाई संकट ने कच्चे तेल, प्राकृतिक गैस और उर्वरकों के उत्पादन एवं परिवहन को बाधित कर दिया है।
- होर्मुज जलडमरूमध्य की आंशिक नाकेबंदी ने वैश्विक आपूर्ति को सीमित कर दिया है, जिससे अस्थिरता बढ़ गई है।
- हालांकि एक अस्थायी युद्धविराम ने ब्रेंट क्रूड की कीमतों को कम किया, लेकिन वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में सुधार अभी भी धीमा है।
- भारत ने 41 स्रोत देशों में आयात का विविधीकरण किया है, फिर भी वह उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील बना हुआ है।
- वैश्विक बेंचमार्क से जुड़े भारतीय क्रूड बास्केट में नरमी से पहले तेज उछाल देखा गया। यह अस्थिरता भारत की ऊर्जा निर्भरता में संरचनात्मक जोखिमों को उजागर करती है।

#### भारत पर आर्थिक प्रभाव

##### आपूर्ति में व्यवधान

- आपूर्ति में व्यवधान कपड़ा, रसायन, सीमेंट और टायर जैसे ऊर्जा-गहन क्षेत्रों को प्रभावित करता है, जिससे अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।
- उर्वरकों की कमी से कृषि उत्पादन को खतरा है, खासकर खरीफ मौसम के दौरान।

### बढ़ती लॉजिस्टिक्स लागत

- बढ़ती लॉजिस्टिक्स लागत समग्र उत्पादन व्यय को बढ़ाती है, अंतिम वस्तुओं की कीमतों को बढ़ाती है और लागत-पुश मुद्रास्फीति में योगदान करती है।

### निर्यात पर दबाव

- निर्यात को मांग और आपूर्ति दोनों पक्षों से दबाव का सामना करना पड़ता है।
- अमेरिका और यूरोप से कमजोर मांग, पश्चिम एशिया में व्यवधान, जो भारत के निर्यात का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, व्यापार प्रदर्शन को कम करता है।
- हालांकि रुपये का मूल्यहास सीमित समर्थन प्रदान कर सकता है, लेकिन यह इन बाधाओं को पूरी तरह से ऑफसेट नहीं कर सकता है।

### वित्तीय और बाहरी क्षेत्र का दबाव

- संकट ने विनिमय दर पर दबाव बढ़ा दिया है। ऊर्जा की बढ़ती कीमतों से विदेशी मुद्रा की मांग बढ़ जाती है, जिससे रुपये का अवमूल्यन होता है।
- यह बड़ी पूंजी निकासी से जटिल हो गया है, जिसमें महत्वपूर्ण विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) निकासी हुई है।
- इसके अतिरिक्त, खाड़ी देशों में भारतीयों से भेजे जाने वाले धन में कमी से विदेशी मुद्रा प्रवाह पर और दबाव पड़ता है।
- ये कारक चालू खाते के घाटे को बढ़ाते हैं, क्योंकि आयात बिल बढ़ते हैं जबकि निर्यात आय कमजोर होती है।

### मुद्रास्फीति और राजकोषीय चुनौतियां

- मुद्रास्फीति का दबाव एक प्रमुख चिंता का विषय है। पेट्रोलियम उत्पादों और उर्वरकों की बढ़ती कीमतों से सभी क्षेत्रों में लागत में वृद्धि होती है।
- यदि अतिरिक्त तरलता के साथ जोड़ा जाता है, तो मुद्रास्फीति अधिक व्यापक हो सकती है।
- सरकार को राजकोषीय दबाव का भी सामना करना पड़ रहा है। तेल विपणन कंपनियों (ओएमसीज) के लिए सब्सिडी में वृद्धि और ईंधन पर उत्पाद शुल्क में कटौती से राजस्व की भारी हानि होती है।
- अनुमान बताते हैं कि यदि संकट बना रहता है तो पर्याप्त वार्षिक राजकोषीय बोज़ पड़ेगा। आर्थिक गतिविधियों में कमी के कारण कम कर राजस्व राजकोषीय घाटे को और खराब कर देता है।
- राज्य सरकारें इसी तरह प्रभावित होती हैं, उन्हें कम कर हस्तांतरण और पेट्रोलियम उत्पादों पर वैट में कटौती करने के दबाव का सामना करना पड़ रहा है, जिससे उनकी राजकोषीय क्षमता सीमित हो जाती है।

### व्यापक आर्थिक परिदृश्य और नीतिगत निहितार्थ

- कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें विकास और मुद्रास्फीति दोनों के लिए जोखिम पैदा करती हैं। लगातार वृद्धि से वास्तविक जीडीपी वृद्धि कम हो सकती है और मुद्रास्फीति में काफी वृद्धि हो सकती है, जिससे मुद्रास्फीति-मंदी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
- नीतिगत उपायों में सावधानीपूर्वक संतुलन की आवश्यकता है।
- उपभोक्ताओं को सुरक्षा प्रदान करना महत्वपूर्ण है, लेकिन लंबे समय तक मूल्य नियंत्रण राजकोषीय रूप से अस्थिर है। बढ़ी हुई कीमतों को धीरे-धीरे उपभोक्ताओं तक पहुँचाने से घाटे को नियंत्रित करने और मांग को सीमित करने में मदद मिल सकती है।
- मुद्रास्फीति को बढ़ने से रोकने के लिए तरलता अनुशासन बनाए रखना आवश्यक है।

### निष्कर्ष

वैश्विक ऊर्जा संकट भू-राजनीति और आर्थिक स्थिरता के बीच की कड़ी को रेखांकित करता है और भारत के लिए, इसका प्रभाव ऊर्जा लागत से परे व्यापार, वित्त और सार्वजनिक वित्त तक फैला हुआ है। जबकि भू-राजनीतिक विकास से अल्पकालिक राहत उत्पन्न हो सकती है, संरचनात्मक कमजोरियां बनी रहती हैं। ऊर्जा विविधीकरण, घरेलू क्षमता निर्माण और राजकोषीय विवेक को शामिल करते हुए एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है।

## परिसीमन और दक्षिणी राज्य (DELIMITATION AND SOUTHERN STATES)

### संदर्भ

दक्षिणी राज्यों ने आशंका जताई है कि परिसीमन प्रक्रिया संसद में उनके प्रतिनिधित्व की हिस्सेदारी को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकती है।

### परिसीमन प्रक्रिया के बारे में

- परिसीमन जनसंख्या परिवर्तन के आधार पर समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए संसदीय और विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं को फिर से निर्धारित करने की प्रक्रिया है।
- इसमें लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में प्रत्येक राज्य को आवंटित सीटों की संख्या तय करना भी शामिल है।
- यह प्रक्रिया 'परिसीमन आयोग' या 'सीमा आयोग' नामक एक स्वतंत्र निकाय द्वारा की जाती है।

### परिसीमन आयोग के लिए कानूनी और संवैधानिक आधार

- **अनुच्छेद 82:** प्रत्येक जनगणना के बाद संसद को राज्यों के बीच लोकसभा सीटों के आवंटन को संशोधित करने की आवश्यकता होती है।
- **अनुच्छेद 170:** यह बताता है कि राज्य विधानसभाओं में सीटों की संख्या को भी पुनर्समायोजित किया जाना चाहिए।
- **परिसीमन अधिनियम:** जब भी परिसीमन की आवश्यकता होती है, यह अधिनियम पारित किया जाता है और एक परिसीमन आयोग गठित किया जाता है।
- अब तक 1952, 1963, 1973 और 2004 में 4 परिसीमन आयोगों का गठन किया जा चुका है। (UPSC प्रारंभिक परीक्षा 2024)

### संबंधित संवैधानिक संशोधन

- **42वां संशोधन (1976):** जनसंख्या नियंत्रण को प्रोत्साहित करने के लिए 2001 की जनगणना तक लोकसभा और विधानसभा सीटों की संख्या को फ्रीज (स्थिर) कर दिया गया।
- **84वां संशोधन (2002):** लोकसभा और विधानसभा सीटों पर इस प्रतिबंध को 2026 तक बढ़ा दिया गया।

### परिसीमन आयोग की संरचना

नियुक्ति	परिसीमन आयोग की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती है और यह भारत निर्वाचन आयोग के साथ समन्वय में कार्य करता है।
सदस्य	<ul style="list-style-type: none"> <li>● सर्वोच्च न्यायालय के एक सेवानिवृत्त/कार्यरत न्यायाधीश (अध्यक्ष)</li> <li>● मुख्य चुनाव आयुक्त।</li> <li>● संबंधित राज्यों के राज्य चुनाव आयुक्त</li> </ul>

### परिसीमन अभ्यास का महत्व

- **आनुपातिक प्रतिनिधित्व:** परिसीमन प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि जनसंख्या के प्रत्येक वर्ग का निष्पक्ष प्रतिनिधित्व हो। परिसीमन आयोग नवीनतम जनगणना के आंकड़ों के आधार पर निर्वाचन क्षेत्रों को फिर से तैयार करता है ताकि प्रत्येक सीट समान संख्या में लोगों का प्रतिनिधित्व करे।
- **राजनीतिक असंतुलन को रोकना:** परिसीमन के बिना, कुछ क्षेत्रों में प्रति मतदाता अधिक सांसद हो सकते हैं, जिससे अन्य क्षेत्रों में कम प्रतिनिधित्व की स्थिति पैदा हो सकती है।
- **एससी और एसटी के लिए आरक्षण:** यह अभ्यास उन क्षेत्रों में अनुसूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) के लिए आरक्षित निर्वाचन क्षेत्रों को भी नामित करता है जहाँ इन समुदायों की महत्वपूर्ण आबादी है, जिससे उनका राजनीतिक समावेश सुनिश्चित होता है।
- **निष्पक्ष और स्वतंत्र प्रक्रिया:** हालांकि कानून के माध्यम से स्थापित किया गया है, परिसीमन आयोग स्वायत्त रूप से कार्य करता है, जो राजनीतिक प्रभाव से मुक्त होता है। इसके निर्णय अंतिम होते हैं और इन्हें संसद या अदालतों में चुनौती नहीं दी जा सकती, जो इसकी निष्पक्षता की रक्षा करता है।

- **"एक बोट, एक मूल्य":** यह प्रक्रिया निर्वाचन क्षेत्रों में जनसंख्या वितरण में एकरूपता सुनिश्चित करके प्रत्येक बोट के समान महत्व के लोकतांत्रिक आदर्श को पुख्ता करती है।

#### परिसीमन अभ्यास के साथ मुद्दे

- **असमान जनसंख्या वृद्धि:** यूपी, बिहार, एमपी और राजस्थान जैसे उत्तरी राज्यों में दक्षिणी और छोटे उत्तरी राज्यों की तुलना में अधिक जनसंख्या वृद्धि देखी गई है, जिससे सीट आवंटन में संभावित असमानताएं पैदा हो सकती हैं।
  - उदाहरण: दक्षिणी राज्यों को लग सकता है कि उनके जनसंख्या नियंत्रण के प्रयासों के लिए उन्हें दंडित किया जा रहा है।
- **संघवाद को खतरा:** कुछ राज्यों के लिए आनुपातिक प्रतिनिधित्व में गिरावट संघीय ढांचे को कमजोर कर सकती है और क्षेत्रीय असंतुलन पैदा कर सकती है।
  - उदाहरण: यह द्रविड़ नाडु जैसे अलगाववादी क्षेत्रीय आंदोलनों को हवा दे सकता है।
- **सीट वितरण फार्मूले में अनिश्चितता:** इस बात पर स्पष्टता की कमी है कि सीट आवंटन मौजूदा हिस्सेदारी पर आधारित होगा या अनुमानित जनसंख्या पर, जिससे प्रतिनिधित्व में निष्पक्षता को लेकर चिंताएं बढ़ती हैं।
- **कार्यान्वयन में देरी:** नारी शक्ति वंदन अधिनियम को परिसीमन प्रक्रिया से जोड़ा गया है। चूंकि परिसीमन अपने आप में एक विवादास्पद कार्य है, इसलिए यह महिला आरक्षण के कार्यान्वयन में और देरी कर सकता है।

#### संतुलित परिसीमन के लिए समाधान

- **लोकसभा सीटों की सीमा (Capping) निर्धारित करना:** अमेरिका की तरह सांसदों की संख्या को निश्चित रखने से राज्यवार प्रतिनिधित्व में यथास्थिति बनी रहेगी और संघीय सिद्धांत बना रहेगा।
  - उदाहरण: यह राष्ट्रीय सर्वसम्मति बनाने में मदद कर सकता है।
- **राज्य विधानसभा सीटों में वृद्धि:** लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व की जरूरतों को पूरा करने के लिए, जनसंख्या वृद्धि के आधार पर राज्य विधानसभाओं में विधायकों की संख्या बढ़ाई जा सकती है।
- **भारित प्रतिनिधित्व मॉडल (Weighted representation model):** क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने के लिए कम जनसंख्या वृद्धि वाले राज्यों के लिए उचित वेटेज सुनिश्चित करने वाला फार्मूला माना जा सकता है।
- **जनसंख्या नियंत्रण को प्रोत्साहित करना:** जिन राज्यों ने अपनी जनसंख्या वृद्धि को प्रभावी ढंग से प्रबंधित किया है, उन्हें सीट आवंटन में नुकसान नहीं होना चाहिए; उन्हें पुरस्कृत करने के तंत्र की खोज की जानी चाहिए।
- **सर्वसम्मति आधारित निर्णय:** संतुलित और व्यापक रूप से स्वीकार्य समाधान तक पहुंचने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के राजनीतिक नेताओं को शामिल करने से क्षेत्रीय तनाव को रोकने में मदद मिल सकती है।
- **संसदीय बहस और समीक्षा:** नए सीट वितरण को अंतिम रूप देने से पहले संसद में संख्यात्मक प्रतिनिधित्व और संघीय समानता दोनों पर विचार करते हुए गहन चर्चा आवश्यक है।